The Statesman 19-January-2021

H'yana CM seeks ₹5,000 cr from central budget for crucial projects

STATESMAN NEWS SERVICE
CHANDIGARH, 18 JANUARY

Haryana Chief Minister, Manohar Lal Khattar, on Monday urged the Central government to allocate Rs 5000 crore in the Union Budget 2021-2022 for execution of various important projects in the state.

The Haryana CM made this request while participating in a pre-budget meeting held by Union finance minister Nirmala Sitharaman through video conferencing.

During the meeting, Khattar apprised the finance minister about the financial requirements for various important projects of Haryana.

The CM while interacting with reporters after the meeting, the CM informed that for the restoration of short term irrigation projects and ponds, Haryana has demanded a grant of Rs 1000 Crore in the Union Budget, 2021-2022. While, Rs 1000 Crore are being demanded for the development of the National Capital Region. In the Union Budget, 2021-2022, Haryana has also demanded Rs 3000 Crore for rural development, Covid-19 management, health and basic medical facilities, he said.

Meanwhile, the Haryana government has made it mandatory to have a 'Parivar Pehchan Patra' for registration of Rabi crops on the 'Meri Fasal Mera Byora' portal. While giving information in this regard an official spokesperson of agriculture and farmers' welfare department said that the registration of Rabi crops has been started by the state government on the 'Meri Fasal Mera Byora' portal from 16 January.

The spokesperson said that it is mandatory for farmers to register their crops on this portal to sell their agricultural produce in mandis and take advantage of schemes related to agriculture or horticulture department.

He informed that this registration can also be done through the Common Service Centre. He has appealed to the farmers to get their crops registered on the portal fasal.haryana.gov.in through their Parivar Pehchan Patra.

Millennium Post 19-January-2021

IMD to give month-wise rainfall forecast from coming monsoon season: DG

NEW DELHI: To better its monsoon forecast, the India Meteorological Department (IMD) will use the multi-model ensemble approach and also give a monthly outlook for the four months of the rainfall season, its director general said on Monday.

The IMD will also give a flood warning forecast to the Central Water Commission for five days, IMD DG Mrutunjay Mohapatra added. It currently gives flood forecasts for three days. Addressing a day-long seminar on 'Annual Monsoon E-Workshop and National E-symposium on Cloud Precipitation, Mohapatra admitted that the forecast for Southwest Monsoon, 2020 was not accurate.

The seminar was attended by senior scientists of the Ministry of Earth Sciences institutions and senior meteorologists of the IMD. On the monsoon forecasts for 2021, Mohapatra said, "We will be using the multi-model ensemble approach for forecasting Southwest Monsoon 2021."

This will include other dynamical models, which give weightage to different parameters while issuing forecasts.

Currently, forecasts are made using the Monsoon Mission Coupled Forecasting System (MMCFS) and Statistical Ensemble Forecasting System (SEFS). "We will also try to give monthly forecasts for all the four months of monsoon," Mohapatra added.

June to September are, officially, the rainfall months of the country.

Currently, the IMD does not give a forecast for June. However, it does give forecasts for every two weeks. June being the sowing week in many parts of the country, the IMD is aiming to provide forecasts for June as well as the other three months.

The IMD had made a forecast of normal rainfall last year but the country received above normal rainfall.

"The seasonal forecast assessment was not that good. We could sense the trend that it is going to be a good year but quantitatively, (but) the forecast performance was not accurate as expected with respect to seasonal rainfall. "Similarly, with respect to rainfall during July and August, we could not predict well. It was beyond the error limit. Except the onset for the monsoon forecast, other forecasts went wrong for the season," Mohapatra said. MPOST

Haribhoomi 19-January-2021

हरिद्वार कुंभ में हर दिन हो रही जांच

गंगा का पानी नहाने और आचमन योग्य है या नहीं

एजेंसी ▶▶| हरिद्वार

कुंभ के दौरान श्रद्धालुओं को हर दिन इस बात की जानकारी मिलेगी कि गंगा का जल नहाने और आचमन लायक है या नहीं है। अब इसको लेकर केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की ओर से प्रदूषण बोर्ड मुख्यालय देहरादून को दिशा निर्देश जारी कर दिए गए हैं। इसके तहत कुंभ में गंगा के जल की प्रतिदिन मॉनिटरिंग की जाएगी। साथ ही प्रत्येक दिन का डाटा केंद्र सरकार को भी भेजा जाएगा।

केंद्र की ओर से अब जो गाइडलाइन लाइन आई है, उसके अनुसार 14 जनवरी से प्रत्येक दिन गंगा के जल की गुणवत्ता की जांच हो रही है। कहा गया कि हरिद्वार में गंगा में फैक्टरियों का प्रदूषित पानी उतना नहीं मिलता है जितना अन्य कुंभ क्षेत्र में मिलता है। साथ ही

इस कारण बढ़ी अशुद्धता

वैसे तो गंगा के उद्गम स्थल गोमुख से निकलने वाली गंगा सबसे पहले हरिद्वार ही पहुंचती है। ऐसे में गंगा का जल नहाने और आचमन के लिहाज से शुद्ध ही रहता है, लेकिन जब से गंगा में आश्रमों और होटलों का सीवर गिरने लगा तब से गंगा के जल में अशुद्धि का स्तर भी बढ़ने लगा है।

हरिद्वार जिले में रेड श्रेणी की फैक्टरियां भी न के बराबर हैं। ऐसे में हरिद्वार में पानी की खराब गुणवत्ता का मामला उतना बड़ा नहीं है।

आचमन के लायक शुद्ध नहीं है पानी

गंगा के जल का आचमन भी आस्था का विषय है। करीब दो माह पूर्व प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की ओर से जो आंकड़े जारी किए गए हैं, उसके अनुसार हरिद्वार में गंगा का जल बी श्रेणी का है। इसके मायने हैं कि गंगा का जल नहाने लायक है, लेकिन आचमन करने जितना शुद्ध नहीं है। हालांकि सी श्रेणी का जल न नहाने लायक होता है और न ही पीने लायक।

Rajasthan Patrika 19-January-2021

हाल-ए-द्रव्यवती : अब जेडीए ने टाटा प्रोजेक्ट को 30 अप्रेल तक काम पूरा करने के दिए निर्देश

1390 करोड़ फूंके, फिर भी नाले सा हाल... 'नदी' का अहसास ही नहीं

पत्रिका डे-स्पेशल मंडे मेगा स्टोरी

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

जयपुर. शहर की सूरत बदलने का दावा जिस द्रव्यवती नदी से किया जा रहा था, उसका बुरा हाल है। 1390 करोड़ रुपए खर्च करने के बाद भी शहरवासियों को नदी का इंतजार है। अब महज 80 करोड़ का काम बचा है, जबकि जमीन पर ज्यादा बदलाव नहीं दिखा है। न तो कहीं पानी बह रहा है, न साइकिल चलाने जैसे हालात हैं।

प्रोजेक्ट से जुड़े अधिकारियों की मानें तो दो वर्ष में पांच से सात फीसदी निर्माण कार्य हुआ है। हाल ही में टाटा प्रोजेक्ट के अधिकारियों के साथ जेडीए अधिकारियों की बैठक हुई। जिसमें 30 अप्रेल तक काम पूरा करने के निर्देश दिए गए हैं।

बदहाल द्रव्यवती नदी।

इसका हुआ उद्घाटन : दो अक्टूबर 2018 को तत्कालीन मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने सुशीलपुरा से बम्बाला पुलिया तक के हिस्से का उद्घाटन किया था।

खास-खास

1676 करोड़ रुपए का कार्यादेश जारी हुआ था नदी के लिए

206 करोड़ रुपए इसी कार्यादेश में हैं 10 वर्ष के लिए रखरखाव के

दावों से दूर हकीकत

1. हमेशा बहेगी नदी: जब प्रोजेक्ट शुरू हुआ था, उस समय अधिकारियों ने यह कहा था कि नदी हमेशा बहेगी। इसके लिए हर 300 मीटर की दूरी पर चैक डेम बनाए गए। बहाव क्षेत्र में 109 चैक डेम बनाए गए हैं।

2. एसटीपी: वर्ष भर पानी रहे और सीवर नदी में न गिरे, इसके लिए लिए पांच एसटीपी लगाए गए हैं। इन सभी की क्षमता 170 एमएलडी है। अधिकारियों ने यहां तक कहा था कि यह पानी खेतीबाड़ी में उपयोग किया जा सकता है।

3. लोग करेंगे वॉक: नदी के किनारे लोगों के घूमने का दावा किया गया था। इतना ही नहीं, साइकिल ट्रेक पर साइकिल चलाने के लिए भी कहा गया था। साइकिल की बुकिंग के लिए ग्रीन राइड एप के जरिए होनी थी।

4.भू जल स्तर में सुधार: ये दावा किया गया था कि इस प्रोजेक्ट के पूरा होने के बाद नदी किनारे की कॉलोनियों का भू-जल स्तर सुधरेगा और पानी की दिक्कत दूर होगी।

हकीकत

1. नदी में कई जगह गंदा पानी भरा हुआ है। अधिकतर जगह पानी रुका हुआ है। ऐसे में काई तक जम गई। बरसात के दिनों में मिट्टी तो बहाव क्षेत्र में आ गई थी, उसके भी साफ नहीं किया गया है।

2. अभी भी अधिकारी एसपीटी सुचारू होने का दावा कर रहे हैं, लेकिन नदी में भरोकाले रंग का पानी यह बताने के लिए काफी है एसपीटी का हश्र क्या हुआ है।

3. साइकिल स्टैंड तो दूर, ट्रैक भी व्यवस्थित नहीं हुआ है। पुरानी चुंगी पर साइकिल ट्रैक की जगह मोटरसाइकिलों को चलते हुए देखा जा सकता है।

4. कुछ माह पहले भू-जल विशेषज्ञों ने जेडीए को रिपोर्ट दी थी। इस पर गौर करें इसमें साफ लिखा है कि नदी के आस-पास की कॉलोनियों में जल स्तर गिरा है। नदी के तल को पक्का करने से ऐसा हुआ है।

ये काम भी आधे-अधूरे

- 30 किमी का क्षेत्र 24 घंटे सीसीटीवी कैमरे की निगरानी में रहेगा
- वाई-फाई, स्मार्ट डस्टबिन और नदी के शहरी क्षेत्र में पब्लिक अनाउंसमेट सिस्टम लगाए जाएंगे।

जो बचा काम

- गोनेर से आगे करीब 12 किमी तक नदी में स्टोन पिचिंग (नदी के किनारों पर बड़े लगेंगे) का काम होना बाकी है। इस क्षेत्र में रेलिंग व फुटपाथ भी बनना है।
- इधर, शहर में हसनपुरा में जमीन पर कब्जा है। इसको लेकर अब तक जेडीए कोई निर्णय नहीं ले पाया है। वहीं, कई अन्य जगह भी काम होना बाकी है।

'प्राथमिकता से होंगे काम पूरे'

टाटा प्रोजेक्ट से तीन महीने में काम पूरा करने की योजना मांगी है। जो काम अधूरे पड़े हैं, उनको प्राथमिकता के आधार पर पूरा कराया जाएगा। करीब 150 करोड़ रुपए के काम बाकी हैं। जहां तक गंदे पानी की बात है तो गंदा नाले का पानी इसमें गिर रहा है। एसटीपी सही तरीके के काम कर रहा है। जब काम पूरा हो जाएगा, उसके बाद नदी अलग स्वरूप में दिखाई देगी।

गौरव गोयल, जेडीसी

Rajasthan Patrika 19-January-2021

जल संरक्षण : भारतीय दर्शन में कल्याण कारक, प्राण ऊर्जा का संवर्धक तथा चेतना विकसित करने वाला तत्व माना गया है जल

पुनर्जीवित करनी होगी भारतीय जल संस्कृति

शिव सिंह राठौड़
भूगर्भ विज्ञान विशेषज्ञ
और राजस्थान लोक सेवा
आयोग के सदस्य

देश-दुनिया में जल संकट के चलते जब-तब पैदा हो रही भयावह स्थिति से हम अनजान नहीं हैं। पुराने समय में किसी विषय की महत्ता पर जोर देने के लिए परम्पराओं का निर्माण होता था और ये परम्पराएं हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग बन जाती थीं। आगे चलकर यही परम्पराएं हमारी संस्कृति को जीवित रखती हैं तथा परम्पराओं के माध्यम से ही महत्त्वपूर्ण संदेश पीढ़ी दर पीढ़ी पंहुचाया जाता रहा हैं।

यदि हम अपनी जल संस्कृति का अध्ययन करें तो पाते हैं कि जल को देवता का स्थान दिया गया है तथा विष्णु का पहला अवतार मत्स्य भी यही संदेश देता है कि जल के बिना जीवन सम्भव नहीं है तथा वायु के बाद जीवनयापन के लिए जल सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। वेदों में जल को देवता मानते हुए उसे आपः या 'आपो देवता' कहा गया है। जल को अमृत, औषधीय गुणों से परिपूर्ण जीवनदाता मानते हुए वेदों में जल पूजन एवं संरक्षण का संदेश दिया गया है। ऋग्वेद संहिता में लिखा है -

आपो अस्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु।
विश्व हि रिप्रं प्रवहन्ति देवीरूदिदाभ्यः शुचिरा पूत एमि।।

अर्थात् मातृवत् पोषक जल हमें पावन बनाए। घृत रूपी जल हमारी अशुद्धता का निवारण करे। जल की दिव्यता अपने दिव्य स्त्रोत से विभिन्न पापों का शोधन करे। जल से शुद्ध और पवित्र बन कर हम उर्ध्वगामी हों।

भगवद्गीता, कुरान, बाइबल, गुरुग्रंथसाहिब इत्यादि सभी धार्मिक ग्रंथों में जीवन के लिए विभिन्न तत्वों के महत्व को विस्तार से बताया गया है, परन्तु जल पर सर्वाधिक जोर देते हुए इसके संरक्षण का संदेश दिया गया है। भारतीय दर्शन में जल को कल्याण कारक, पुष्टि वर्धक, प्राण ऊर्जा का संवर्धक तथा चेतना विकसित करने वाला तत्व माना गया है। पाश्चात्य दर्शन में भी जल को जगत का आधार बताया है। पाश्चात्य दार्शनिक थैलिज ने कहा है कि जल ही वह द्रव्य है जिसमें सभी वस्तुओं की उत्पत्ति होती है तथा अन्त में उसी में सभी वस्तुएं विलीन हो जाती हैं तथा अरस्तू ने भी थैलिज के सिद्धांत से सहमत होते हुए माना है कि जल सभी वस्तुओं का उपादान कारण है। अतः जल से ही जीवन सम्भव है।

जल की उपलब्धता को देखते हुए ही विश्व में

आज हमारे परम्परागत जलस्त्रोत अपने अतीत के गौरवमयी इतिहास को पुनर्जीवित करने के लिए प्राचीन परम्पराओं के निर्वहन को तरस रहे हैं। जल आज के समय की सबसे महत्त्वपूर्ण विरासत है।

जितनी भी पुरानी सभ्यताएं हैं, वे नदी के किनारे ही विकसित हुई हैं। चाहे सिन्धु घाटी सभ्यता हो या मैसोपोटामिया की सभ्यता। उसके बाद धीरे-धीरे शहरों का विकास होने लगा तथा तत्कालीन शासकों ने अपने राज्यों की स्थापना, राजधानियों और दुर्गों का निर्माण जल की उपलब्धता एवं सुरक्षा के मद्देनजर करवाया। वे जल का महत्त्व जानते थे और उनका मानना था कि मनुष्य भोजन के बिना रह सकता है, लेकिन जल के बिना जीवनयापन सम्भव नहीं है। इसीलिए अनेक परम्परागत जल स्रोतों का निर्माण समय-समय पर आवश्यकतानुसार पूर्व के शासकों और प्रजाजन ने करवाया, जो जलस्रोत निर्माण की परम्परा के रूप में विकसित हुई। ऐसे हर निर्माण कार्य से पूर्व भूमि व उपकरणों का विधिवत पूजन होता था। इस प्रक्रिया के दौरान जल की उपलब्धता सुनिश्चित होने पर गुड़ बांटा जाता था।?जलस्रोत के आसपास पत्थरों पर उकेरी जाने वाली कलाकृतियां भी जलस्रोत का महत्त्व बढ़ाती थीं।

वर्षा जल संरक्षण की संरचना भी इन परम्परागत जल स्रोतों का अभिन्न अंग हुआ करती थी, जिससे भूमिगत जल स्तर में कमी नहीं आती थी।?आसपास के पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए पेड़-पौधे लगाए जाते थे।?घने वृक्षों की वजह में शुद्ध वायु तथा वर्षा चक्र भी नियंत्रित रहता था। उसके बाद जलस्रोत आमजन के प्रयोग के लिए स्थानीय नागरिकों को प्रयोग व संरक्षण के लिए सौंप दिया जाता था। उस समय इस मांगलिक वेला पर महिलाएं मंगल गीत गाती थीं तथा सभी को प्रसाद वितरण कर खुशी मनाई जाती थी। जल को देवता मानते हुए हर दिन उस जलस्रोत पर दीपक जलाया जाता था तथा उसकी पूजा-अर्चना होती थी। यहां तक कि जलस्रोतों पर कोई भी व्यक्ति चरणपादुका भी लेकर नहीं जाता था। ये सभी परम्पराएं हमारी समृद्ध जल संस्कृति का अभिन्न अंग रही हैं और इस तरह हम जलस्रोतों को सर्वोच्च स्थान और महत्त्व देते थे। ये परम्पराएं ही हैं जिनसे हमारे जलस्रोतों का महत्त्व पीढ़ी दर पीढ़ी अक्षुण्ण रहता था। इस कार्य में जन सहभागिता होती थी। हर व्यक्ति जलस्रोतों की साफ-सफाई, संरक्षण, पर्यावरण सुरक्षा अपनी जिम्मेदारी समझ कर करता था। आज भी सैकड़ों वर्ष पूर्व बने कुछ पारम्परिक जलस्रोत (तालाब, बावड़ी, झालरे, सागर कुएं, टांका, नाडा-नाडी) यदि जीवित हैं तो इसका आधार ये परम्पराएं ही हैं।

समय के साथ गांवों और शहरों में विकास हुआ तो भौतिक सुख-सुविधाओं में बढ़ोतरी करते हुए पाइपलाइन के माध्यम से घर-घर जलापूर्ति की जाने लगी।?इस वजह से परम्परागत जलस्रोतों की उपेक्षा होने लगी। बदलती परम्पराओं एवं जागृति के अभाव में अधिकांश परम्परागत जलस्रोत कचरा पात्र बनते जा रहे हैं। कितने ही जलस्रोत लुप्त हो चुके हैं, और कितनों पर अस्तित्व का संकट मंडरा रहा है।?यही वजह है कि वर्षा जल का समुचित संरक्षण नहीं हो पा रहा है और आज सभी जगह घटता भूजल स्तर हम सभी के लिए चिंता का विषय बना हुआ है। रख-रखाव के अभाव में जलस्रोतों का वास्तुशिल्प भी जीर्ण-शीर्ण हो रहा है।

आज हमारे परम्परागत जलस्रोत अपने अतीत के गौरवमयी इतिहास को पुनर्जीवित करने के लिए प्राचीन परम्पराओं के निर्वहन को तरस रहे हैं। जल आज के समय की सबसे महत्त्वपूर्ण विरासत है। यदि आज की सरकारें आम जन तक जल संरक्षण और इसके महत्त्व का संदेश पंहुचा कर जागरूक करना चाहती हैं तो हमारी परम्पराओं को पुनः जीवित करना ही होगा। ऐसा करके ही हम जल की प्रत्येक बूंद को संरक्षित करना सुनिश्चित कर सकते हैं।

कितने ही जलस्रोत लुप्त हो चुके हैं, और कितनों पर अस्तित्व का संकट मंडरा रहा है।यही वजह है कि वर्षा जल का समुचित संरक्षण नहीं हो पा रहा है और आज सभी जगह घटता भूजल स्तर हम सभी के लिए चिंता का विषय बना हुआ है।